ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अग्ने वर्चस्विनं कृणु। अथर्व0 3/22/3

हे उन्नति साधक प्रभो ! मुझे तेजस्वी बनाएं।

O Lord ! The pronoter of all ! Make me luminous and full of splendour.

वर्ष 39, अंक 10 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 11 जनवरी, 2016 से रविवार 17 जनवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान में: 9 जनवरी से 17 जनवरी 2016

प्रगति मैदान में वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार यज्ञ आरंभ

गत 13 वर्षों में अभी तक के सबसे बड़े प्रचार स्टाल का 9 जनवरी को हुआ भव्य उद्घाटन

वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल का उद्घाटन करते श्रीमती मृदुला चाहौन एवं श्री आनन्द चौहान जी (अमेटी परिवार) साथ में हैं सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष विद्या मित्र ठुकराल, उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान, श्रीमति विभा आर्या, श्री सत्यानन्द आर्य एवं उर्दू सत्यार्थ प्रकाश का लोकार्पण करते श्री विद्या मित्र ठुकराल, श्री राकेश ठुकराल जी एवं अन्य महानुभाव।

समाप्तप्रायः उर्दू सत्यार्थ प्रकाश - वर्षों बाद पुनः नजर आई पुस्तक मेले में: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने किया प्रकाशन एवं लोकार्पण

युवा कर रहे हैं वेद एवं अन्य मत-मतान्तरों की शंकाओं के समाधान के लिए विशेष कक्ष में विद्वानों से चर्चा

नई दिल्ली 24वें विश्व पुस्तक मेला प्रगति मैदान में एमिटी परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री आनन्द चौहान एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती मृदुला चौहान द्वारा 9 जनवरी 2016 को प्रातः 11.30 बजे हिन्दी साहित्य स्टाल का उद्घाटन किया गया। इस वर्ष आर्य समाज का साहित्य प्रचार स्टाल गत 13 वर्षों के उत्साह एवं सफलता को देखते हुए अभी तक का सबसे बड़ा स्टाल है।

महर्षि दयानन्द और वेद की विचारधारा को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आर्य जनता द्वारा दिये गए सहयोग से 25000 की मात्रा में केवल मात्र 10/- रुपये में देने का लक्ष्य रखा। इसके साथ-साथ वेद, उपनिषद, वेदांग, दर्शन एवं अन्य वैदिक आर्ष साहित्य पर विशेष छूट दी जा रही है।

पुस्तक मेले में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अंग्रेजी साहित्य प्रेमियों के लिए हॉल नम्बर 6 में एक स्टाल न. 108 पर अंग्रेजी वेद, सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य ऋषिकृत वैदिक साहित्य रखा गया है। इस स्टाल का उद्घाटन 9 जनवरी को ही श्री सत्यानन्द आर्य जी एवं श्री शिव भगवान लाहौटी जी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पहली बार प्रकाशित उर्दू

...शेष पेज 5 पर

17 जनवरी 2016 तक चलेगा नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला

हिन्दी साहित्य स्टाल: हॉल नम्बर 12-12 ए, स्टाल नम्बर 308-317

अंग्रेजी साहित्य स्टाल: हॉल नम्बर 6, स्टाल नम्बर 108

20/- रुपये की विशेष सब्सिडी के साथ हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये एवं उर्दू सत्यार्थ प्रकाश मात्र 70/- रुपए में

आप भी अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश सब्सिडी हेतु सहयोग प्रदान करें

*'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' अकाउंट नम्बर **0133002100005251 पंजाब नैशनल बैंक**, **IFS code: PUNB 0013300 MICR No. : 110024092***

*कृपया अपनी राशि जमा कराने के उपरांत श्री संदीप आर्य (9650183339) को सूचित करें एवं डिपोजिट स्लिप **aryasabha@yahoo.com** पर भेजकर रसीद मंगवा लेवें।*

मालदा का मौन आखिर किस स्वीकृति का लक्षण है?

सिहांसन के मौन होने के कुछ भी कारण हो सकते हैं किन्तु शहीदों के घर से निकली मासूम बच्चों की किलकारी, एक शहीद की बहन का मूक दर्द, उसकी आँखों से छलकता पानी, एक पत्नी की वेदना में लिपटी सिसकियाँ और माँ बाप की ममता के बुझे चिराग; उनके बहते आंसू पर हमारी कलम भला क्यों चुप रहे? पठानकोट हमले ने एक बार फिर साबित कर दिया कि भेड़िया के साथ कोई भेड़ लाख बार संधि करे किन्तु भेड़िया अपना स्वभाव नहीं बदलेगा मालदा और पठानकोट दो घटनाएं एक दिन में घटित हुई और दोनों में अल्लाह हो अकबर का नारा था एक घटना को मीडिया ने दबा दिया और दूसरी का खूब विश्लेषण हुआ और शुरू से अंत तक एक बात सामने आई कि घटना हमेशा की तरह पाक प्रायोजित थी।

पठानकोट हमला पाक प्रायोजित था किन्तु प्रश्न यह है कि मालदा पश्चिम बंगाल की घटना किसके द्वारा प्रायोजित थी? क्या उसमें भी पाकिस्तान का हाथ था? आखिर किसके कहने पर दो से ढाई लाख लोग सड़कों पर उतर आये? किसके कहने पर करोड़ों की सम्पत्ति को आग के हवाले कर दिया? आखिर इसका सूत्रधार कौन था? और सरकार इस मामले पर मौन क्यों बनी रही? कहीं यह मौन अगली घटना की स्वीकृति का लक्षण तो नहीं है?

कल भारत सरकार ने एक बार फिर पाकिस्तान को पठानकोट हमले के सारे साक्ष्य सौप दिए और पाकिस्तान की तरफ से हमेशा की तरह कड़ी कार्यवाही का आश्वासन दिया गया पर क्या इतने आश्वासन से काम चल जायेगा? साक्ष्य तो भारत सरकार ने ताज हमले के बाद भी सौपे थे, क्या हुआ? 250 लोगों का हत्यारा हाफिज सईद अब भी पाकिस्तान में खुला घूम रहा है। कंधार विमान अपहरण कांड में छोड़ा गया आतंकी संगठन जैश ए मोहम्मद का सरगना अजहर मसूद आज भी पाकिस्तान में बैठकर खुले आम भारत सरकार को चुनौती दे रहा है। उन पर पाकिस्तान ने कितनी कार्यवाही की है? हजार बार दाउद इब्राहीम के पाकिस्तान में होने के सबूत भारत ने पाकिस्तान को सौंप दिए क्या कार्यवाही हुई? जो अब पाकिस्तान से कार्रवाही की आशा की जाये!

जब कुरुक्षेत्र में दोनों सेनाओं के बीच धनुष उठाकर अर्जुन ने योगिराज श्री कृष्ण से कहा था हे माधव! मेरे रथ को दोनों सेनाओं के बीच खड़ा कीजिये ताकि मैं

...शेष पेज 5 पर

स्वाध्याय

युद्ध द्वारा परमात्मा का बन्धुत्व

अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे।। -ऋ. 7/21/13; अथर्व. 20/114/1
ऋषिः- काण्वः सोभरिः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-निचृदुष्णिक्।।

विनय- हे परमेश्वर! तुम्हारे लिए न कोई शत्रु है और न कोई बन्धु है। तुम जिस उच्च स्वरूप में रहते हो वहां शत्रुता और बन्धुता का कुछ अर्थ ही नहीं। तुम्हारे लिए कोई नायक वा नियन्ता भी कैसे हो सकता है? तुम्हीं एकमात्र सब जगत् के नियन्ता हो, नेता हो। तुम जन्म से, स्वभाव से ही ऐसे हो। 'जनुषा' का यह तात्पर्य नहीं कि तुम्हारा कभी जन्म होता है। तुम तो सनातन हो, सनातन रूप से ही शत्रुरहित और बन्धुरहित हो, पर निर्लिप्त होते हुए भी तुम हमारे बन्धुत्व (आपित्व) को चाहते हो और इस बन्धुत्व को तुम युद्ध द्वारा चाहते हो, युद्ध द्वारा ही चाहते हो। अहा! कैसा सुन्दर आयोजन है! तुम चाहते हो कि संसार के सब प्राणी सांसारिक युद्ध करके ही एक दिन तुम्हारे बन्धु बन जाएं, तुम्हारे बन्धुत्व का साक्षात्कार कर लें। सचमुच बिना लड़ाई के मिली सुलह, बिना संघर्ष के मिली प्रीति, बिना संग्राम के मिली मैत्री नीरस है, फीकी है, अवास्तविक है, उसका कुछ मूल्य नहीं है। बन्धुता तो बन्धुता की, लड़ाई की सापेक्षता में ही अनुभूत की जा सकती है। इसीलिए हे मेरे जगदीश्वर! मुझे अब समझ में आता है कि तुमने कल्याणस्वरूप होते हुए भी इस अपने जगत् में दुःख, दर्द, दारिद्रय, रोग, क्लेश, आपत्ति, उलझन आदि को क्यों उत्पन्न होने दिया है। अब समझ में आता है कि तुमने इन कठिनाइयों को खड़ा करके प्राणियों के जीवन को निरंतर युद्धमय, संघर्षमय क्यों बनाया है। सचमुच, यह सब कुछ तुमने इसीलिए किया है कि हम इन बाधाओं को जीतकर, इन कठिनाइयों, उलझनों को पार करके तेरे बन्धुत्व के रसास्वादन के योग्य बन जाएं। तू तो अब भी हमारा बन्धु है। हम में से जो तेरे द्रोही कहे जाते हैं, जो नास्तिक हैं-उनका भी तू सदैव एक-समान बन्धु है (और वास्तव में किसी का भी बन्धु या शत्रु नहीं है) तो भी तेरी उस बन्धुता का अनुभव-तुझे बन्धु-रूप में पा लेने का परमानन्द-हमें तभी मिल सकता है जब हम संसार के सभी परम विकट युद्ध को विजय करके तेरे पास आ पहुंचे। तू चाहता है कि आज जो तुझसे बहुत दूर है, तेरा कट्टर द्वेषी है, वह युद्ध करके एक दिन तेरा उतना ही नजदीकी और उतना ही कट्टर बन्धु बन जाए; अतः अब मैं तेरे बन्धुत्व पाने के समर में ही कमर कसे खड़ा हुआ अपने को पाता हूं; जितनी बार मरूंगा इसी समर की युद्धभूमि में मरूंगा और अन्त में तेरे बन्धुत्व को पाकर ही दम लूंगा। यही तेरी इच्छा है, यही तेरी मुझसे प्रेममय इच्छा है।

शब्दार्थ- इन्द्र-हे परमेश्वर! त्वम्-तुम जनुषा-जन्म से ही, स्वभाव से ही अभ्रातृव्यः- शत्रु- रहित अनापिः- बन्धु-रहित अना- नियन्तृ- रहित असि-हो, सनात्-तुम सनातन हो, सनातन से ही ऐसे हो, पर तुम युधा-युद्ध द्वारा इत्-ही आपित्वम्-बन्धुत्व को इच्छसे-चाहते हो।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

यह चरमपंथ कौन सा धर्म है?

अ भी पिछले कुछ दिनों से एक नया धर्म सामने आया जिसे चरमपंथी कहा जाता है, कबीरपंथी सुना था, दादूपंथी सुना था पर यह चरमपंथी अभी प्रचलन में आया है। जब कहीं भी इस्लामिक आतंकियों द्वारा हमला होता है तो उसे चरमपंथ का हमला कहा जाता है। यदि चरमपंथ और इस्लामिक उग्रवाद अलग-अलग हैं तो फिर आतंकियों द्वारा 'अल्ला-हो-अकबर' के नारे, लगाने का क्या कारण है? हम यह बात किसी धार्मिक विद्वेष में नहीं कह रहे बस साफ करना चाहते हैं कि यह चरमपंथ आखिर कौन सा मजहब है?

अब इस चरमपंथ के दर्पण से धूल हटाकर देखें तो साफ दिख जायेगा उसके लिए पिछले महीनों के राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय बयानों पर नजर डालें तो कुछ महीने पहले चीन के एक अधिकारी ने मुस्लिम महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले बुर्के को लोगों द्वारा अपनी पहचान छिपाने के लिए दुरुपयोग किया जाने वाला आवरण बताते हुए कहा कि बुर्का 'चरमपंथ और पिछड़ेपन का परिधान' है। जिस कारण पिछले कुछ सालों से विश्व में चरमपंथी हमलों में साफ बढ़ोत्तरी दिख रही है। अफगानिस्तान के मुद्दे पर आयोजित मंत्री स्तरीय सम्मेलन हार्ट ऑफ एशिया में विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से यह सुनिश्चित करने के लिए भी कहा कि आतंकवाद और चरमपंथ के बलों को किसी भी नाम, रूप या स्वरूप में पनाहगाह या शरणस्थल न मिल पाए। संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) का कहना है कि सान बर्नार्डिनो में गोलीबारी को अंजाम देने वाले पाकिस्तानी पति-पत्नी चरमपंथ से प्रभावित थे और उन्होंने हमले से कुछेक दिन पहले ही एक मदरसे में निशाना लगाने का अभ्यास किया था।

कुछ दिन पहले एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए ओबामा ने कहा था, पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान में अल कायदा को तबाह करने जैसी कामयाबियों के बावजूद चरमपंथ अब भी कायम है। ऐसे में हमें आतंकवाद पर हावी बने रहने की जरूरत है और अमेरिकी रक्षा मुख्यालय पेंटागन के वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि हिंसक चरमपंथ दक्षिण एशिया में सबसे तेजी से विस्तार लेती और तात्कालिक चुनौती है। हालाँकि इस मामले को साफ देखने की कोई जरूरत नहीं रह जाती बस पूरे विश्व में हिम्मत की कमी के कारण नाम बदल दिया गया किन्तु कुछ लोग ईमानदारी से आज भी सच स्वीकार करते है प्रतिष्ठित अरब पत्रकार अब्दुल रहमान अल-रशद ने पिछले दिनों अपने कॉलम में लिखा था फ्रांस में हुए हालिया आतंकी हमले के खिलाफ विरोध प्रदर्शन पेरिस के बजाय किसी मुस्लिम देश की राजधानी में होना चाहिए था, क्योंकि इस मामले में मुसलमान ही संकट में शामिल हैं और उन्हीं पर आरोप लगाया गया। चरमपंथ की कहानी मुस्लिम समाज से शुरू होती है और उन्हीं के समर्थन एवं चुप्पी की वजह से इसने आतंकवाद का रूप लिया और लोगों को नुकसान पहुंचा रहा है। इसका कोई मतलब नहीं कि पीड़ित फ्रांस के लोग सड़कों पर उतरे। आवश्यकता इस बात की है कि मुस्लिम समाज पेरिस के अपराध और इस्लामी चरमपंथ को सामान्य रूप से स्वीकार कर माफी मांगे।

कुछ दिनों पहले मुशर्रफ से पूछा गया कि पाकिस्तान को किससे ज्यादा खतरा है-चरमपंथ से या भारत से। उनका जवाब चरमपंथ था। अब प्रश्न फिर यही है । इस दोहरेपन की शुरुआत मुस्लिम समुदाय से हुई या मीडिया से जहां इस बात पर भारी मतभेद है कि आज कौन-सी चीज प्रामाणिक इस्लाम का गठन करती है या हम खुद को मूर्ख बनाते हैं, जब हम मुसलमानों से कहते हैं कि "वास्तविक इस्लाम" यह है, क्योंकि मुसलमानों का कोई वेटिकन नहीं है। धार्मिक प्राधिकार का कोई एक स्रोत नहीं है, आज कई इस्लाम हैं-नैतिकतावादी वहाबी, सलाफी, जेहादी विकृति उनमें से एक है और हम जितना सोचते हैं, उससे कहीं ज्यादा समर्थन उसे प्राप्त है। 'अल्ला-हो-अकबर' के नारे, उनका नतीजा एक ही है। जमीन पर बेकसूर लोगों का खून और बाकी बचे उनके रिश्तेदारों के हिस्से समूची जिंदगी का दर्द। यह दर्द जितना ज्यादा होता है, आतंकियों का सुकून उतना ही ज्यादा होता है। इससे उपजी विद्रोह की आग जितनी ही सुलगेगी, चरमपंथियों की उतनी ही बड़ी कामयाबी होगी। इन घटनाओं को अंजाम देते हुए चरमपंथियों अपने के जितने भी साथी मरे, उनकी मौत संगठन की शहादत सूची में उतनी ही महिमामंडित होती है। सुरक्षा बलों के हाथों जितने आतंकी मरेंगे, बदले की भावना उतनी ही ज्यादा परवान चढ़ेगी। एक हमले की कामयाबी अगले ऐसे कई धमाकों की रणनीति की बुनियाद भी खड़ी कर देती है। पूरी दुनिया में आतंकी संगठनों का यही तरीका और उसका ऐसा ही अंजाम है। फिर कोई बताएं तो सही चरमपंथ और इस्लामिक आतंक में अंतर क्या है?

-सम्पादकीय

ग्रन्थ परिचय

गर्दभतापिनी उपनिषद्

प्रश्न 1: महर्षि के जीवन चरित से ज्ञात होता है कि वे सदा प्रसन्न रहा करते थे और अपने भाषणों के बीच में कभी-कभी श्रोताओं का मनोरंजन भी करते थे। तो क्या मनोरंजन विषयक कोई ग्रन्थ भी महर्षि ने लिखा है?

उत्तर: हां, उन्होंने 'गर्दभतापिनी उपनिषद्' नामक मनोरंजन विषयक एक ग्रन्थ लिखा था।

प्रश्न 2. क्या यह ग्रन्थ वर्तमान में उपलब्ध है?

उत्तर: नहीं, दुर्भाग्य इसकी कोई भी प्रति वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

प्रश्न 3. तो, इस ग्रन्थ का उल्लेख कहां मिलता है?

उत्तर: पं. देवेन्द्रनाथ द्वारा संगृहीत महर्षि के जीवन चरित भाग-1, पृ., 279 में इस पुस्तक का उल्लेख इस प्रकार मिलता है, 'श्री स्वामी जी ने रामतापिनी और गोपालतापिनी उपनिषदों की तरह 'गर्दभतापिनी उपनिषद्' भी बना रखी थी, जिसमें से कभी वचन उद्धृत करके सुनाया करते थे।'

प्रश्न 4: इस पुस्तक का रचना काल क्या था?

उत्तर: उपर्युक्त वर्णन के आधार पर इस पुसतक का रचना काल आषाढ़ बदी 2, संवत् 1931 से पूर्व का है।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।

-मो. 09540040339

बोध कथा

जैसा दृष्टिकोण, वैसा अन्तः करण

वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देखकर सोचा-कितना सुन्दर स्थान है यह! यहां बैठकर ईश्वर का ध्यान करूंगा।

एक चोर ने उसे देखा तो सोचा- वाह! यह तो सुन्दर स्थान है! चोरी का माल लाकर यहां रखा करूंगा।

एक दुराचारी ने देखा तो सोचा- 'यह तो अत्यन्त एकान्त स्थान है! दुराचार करने के लिए इससे उतम स्थान और कहां मिलेगा?''

एक जुआरी ने देखकर सोचा-'अपने साथियों को यहां लाऊंगा, यहां बैठकर हम जुआ खेलेंगे।'

अलग-अलग दृष्टिकोण होने के कारण एक ही मकान को प्रत्येक व्यक्ति ने अलग-अलग रूप में देखा। जैसा दृष्टिकोण बनाओगे, वैसा अन्तःकरण बनेगा अवश्य। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा अन्तः करण अच्छा हो तो दृष्टिकोण अच्छा बनाओ।

सब जग ईश्वर-रूप है, भला बुरा नहिं कोय।
जैसी जाकी भावना, तैसा ही फल होय।।

वेदों की महत्ता

...सर्वव्यापक परमेश्वर से ही ऋक, यजु, साम, अथर्व, का प्रादुर्भाव हुआ। वेद समस्त ज्ञान की पूंजी है।' नास्ति वेदात् परे शास्रं' वेद से बढ़कर कोई दूसरा शास्त्र नहीं। अर्थात् वेद में ऐसी कौन सी विद्या है जिसमें भली भांति ज्ञान नहीं।...

वेद शब्द का अर्थ ज्ञान है। 'विद्यन्तेऽनेनेति वेद:' जिससे ज्ञान प्राप्त किया जाए वह वेद है। विद ज्ञाने, विद विचारणे, विदलृलाभे, विद्सत्तायां इन चार धातुओं से वेद शब्द की सिद्धि होती है। किसी ने वेद की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है -'विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभन्ते वा' अर्थात् जिसके द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पुरुषार्थ आदि की ज्ञान प्राप्ति होती है वह वेद है। वेद अत्यन्त ज्ञान स्वरूप परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है। अत: उसे मनीषियों ने ईश्वर की वाणी कहा है। सृष्टि के प्रारम्भ में चार पवित्र आत्माएं जिनका नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा इन चार ऋषियों को परमपिता परमेश्वर ने वेदों का ज्ञान दिया। अत: यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में लिखा है-

'कुर्वन्न वेद कर्माणि जीजिविणे शतं शमा'

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। यजु. 40 अ. 2 मंत्र) अर्थात्- इस चक्रवत परिवर्तनशील संसार में आकर मनुष्यों को चाहिए कि उन कामों को करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे।

वेद हमारे जीवन के अंग हैं। जैसे कि यह तो स्वत: प्रमाणित है। क्योंकि महर्षि ने वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक माना है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। (आर्य समाज नियम 3) मनु महाराज ने भी स्पष्ट किया है 'वेदो खिलो धर्म मूलम्' अत: सारे संसार का धर्म वेदमूल है। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त जी ने भी लिखा है-

विख्यात् चारों वेद मानों चार सुख का सार हैं।
चोरों दिशाओं के हमारे वे जय ध्वज चार हैं।।
विज्ञान गरिमा चार हैं विज्ञान के भण्डार हैं।
वे पुण्य पारावार हैं आचार हैं आधार हैं।।

इस प्रकार वेद में भी कहा है-

'तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत ऋच: समानी यक्षिरे।
छन्दसी यसिरे तस्मात् यजु तस्माद् जायत:।।

अर्थात् सर्वव्यापक परमेश्वर से ही ऋक, यजु, साम, अथर्व, का प्रादुर्भाव हुआ। वेद समस्त ज्ञान की पूंजी है।' नास्ति वेदात् परे शास्रं' वेद से बढ़कर कोई दूसरा शास्त्र नहीं। अर्थात् वेद में ऐसी कौन सी विद्या है जिसमें भली भांति ज्ञान नहीं। वेद हमारा प्राचीन ग्रन्थ है तथा पवित्र ग्रन्थ हैं।

'वित्देव मनुस्याणां वेद चक्षु सनातनं।
अशक्यश्च प्रमेयश्च वेद शास्रमिति।।'

अर्थात् शुभ और अशुभ को दिखाने वाला पितृदेव मनुष्यों का शास्वत चक्षुवेद है। संसार के सभी रहस्य वेद शास्त्रों में हैं। 'भूतभव्यं भविष्यं च सर्ववेदात् प्रसिध्यति' अर्थात् वर्तमान और भविष्य में भी होने वाली सब बातें वेद से सिद्ध हैं। मानव की सर्वांगीण उन्नति के लिए अपेक्षित समस्त ज्ञान वेद में हैं।

'धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमंऋति' आर्य समाज द्वारा निर्मित नहीं अपितु आदि सृष्टि के महापुरुष महर्षि मनु का कथन है कि जो धर्म को जानने की इच्छा करे उसके लिए वेद ही परम प्रमाण है। इतना ही नहीं 'नौस्तिक वेद निन्दक:' वेद की निन्दा करने वाला नास्तिक शूद्र कहलाता है। वेद का अध्ययन कर मनुष्य दु:खों से छूट जाता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में वेदों की महिमा के कई उदाहरण मिलते हैं। जैसे कि महर्षि भारद्वाज वृद्ध तो गये तो इन्द्र ने उनके पास आकर कहा आपको 900 वर्ष तक की आयु मिले तो आप क्या करेंगे? महर्षि भारद्वाज ने उत्तर दिया मैं उस आयु को भी ब्रह्मचर्य पालन करते हुए तथा वेदाध्ययन करते हुए व्यतीत करूंगा। यह है वेद की महत्ता। इस प्रकार ज्ञान राशि अनन्त है। 'अनन्ता वै वेदा' वेद ज्ञान तो अनन्त है इसलिए वेदों को पढ़ना दु:खों को पार करना है।

'यमो नो मातुं प्रथमो विवेद' परमात्मा ने पहले सबके लिए वेद मार्ग खोल दिया है। जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने उस मार्ग पर चलकर सुख पाया है। उसी वेद मार्ग पर चलकर सभी मनुष्य उन्नति करें। वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं वेद संस्कृत साहित्य की मुकुट मणि है। जब तक पृथ्वी पर नदियां और पर्वत रहेंगे तब तक संसार में वेदों की महिमा प्रचलित रहेगी। वेद ज्ञान से ही संसार की सुखशान्ति का विस्तार होगा।'त्वमेव विदित्वाऽतिमुत्युमेति नान्य: पन्या विद्यन्तेऽयनाय:' जो वेद को महत्व नहीं देता उसे वेद पढ़ने से क्या लाभ? इतना ही नहीं वेद ज्ञान की प्राप्ति के लिए 'यो नऽधित्यं वेद मन्त्र कुरुते श्रमम् स जीवनै शुद्रत्वं आशुगच्छति सान्वय' जो व्यक्ति वेद का स्वाध्याय नहीं करता वह शीघ्र ही शूद्र कुल को प्राप्त होता है। जबकि वेद के ही एक-एक मन्त्र ज्ञान पूर्ण हैं।

'बुद्धि पूर्वक वाक्य कृतिवेदे' वेद वाक्य की रचना बुद्धि पूर्वक है। इसलिए 'प्रजातन्तु माच्छेप्सि' ज्ञान रूपी तन्तु का द्वेदन मत करो और वेदों को महत्व दो। संसार में वेद की ज्योति जलती रहेगी। जिस घर में वेद का स्वाध्याय नहीं वह घर शमशान के समान है। इसलिए किसी कवि के शब्दों में-

जीवन सफल बनाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।
नरतन लाभ उठाना है तो वेद पढ़ो और वेद पढ़ाओ।।

वेद जीवन दर्शन या आचार संहिता है जिसमें सभी वर्ण, आश्रम, राजा, प्रजा, गुरु, शिष्य, माता-पिता, पति-पत्नी आदि के कर्त्तव्यों के कर्मो का सरल और ललित भाषा में दिया गया है।

जो जन सहायता करने वाले मित्र समान वेद को त्याग देता है उसकी वाणी के कथन में भी लाभ नहीं होता, लोग उसे मिथ्यावादी समझते हैं। मनुस्मृति में लिखा है-

'सर्विषां तु नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्'

वेद शब्देभ्य एवा दौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ।।य. 1.28।। ईश्वीय ज्ञान में परमेश्वर द्वारा प्रदत्त ज्ञान में परस्पर विरोधी कथन या विवरण नहीं हो सकता। परमात्मा सर्वज्ञ है अत: उसका ज्ञान भी निर्भय सार्वकालिक है। ईश्वरीय पुस्तक में सृष्टि क्रम के विरुद्ध ज्ञान नहीं है। ईश्वर नित्य होने से उसका ज्ञान भी नित्य है अन्य ग्रन्थ परत: प्रमाण है ; परन्तु वेद स्वत: प्रमाण है। वेदों में परम चक्षु वेदों में परमं बलम्' वेदों में परमं धाम वेदों में ब्रह्मचोत्तमम् वेद ज्ञान का भण्डार है। इनके स्वाध्याय से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बल की प्राप्ति होती है। वेद परम धाम मुक्ति को प्राप्त करने वाले हैं और सर्वोत्तम ब्रह्म का ज्ञान कराने वाले हैं। **- अंजलि आर्य, पंचगांव**

युवकों आगे आओ! तुम ही हो भारत का भविष्य महान्

...भारत को महान् बनाने के लिए अपेक्षित है अपने ऊपर दृढ़ विश्वास कि हम अवश्य सफल होंगे तथा उच्चकोटि का कार्य करने का संकल्प लेंगे। ऐसे मन से तुम अपने और राष्ट्र के जीवन को उन्नत कर सकोगे।...

हे भारत के कर्णधार! तुम भारत के भावी भाग्य विधाता हो। तुम्हें भारत के उच्च आदर्शों को फिर से स्थापित करना है और अपने देश को महान बनाना है। तुम उन ऋषियों की सन्तान हो जिनके चरणों में बैठकर सारा संसार कभी शिक्षा प्राप्त करता था। तुम उन आर्यो की सन्तान हो जिनका जयघोष था - **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** उनके पदचिन्हों पर चलकर तुम संसार को सभ्य, सुसंस्कृत, सुशील और शालीन बनाओगे। भारत को महान् बनाने के लिए अपेक्षित है अपने ऊपर दृढ़ विश्वास कि हम अवश्य सफल होंगे तथा उच्चकोटि का कार्य करने का संकल्प लेंगे। ऐसे मन से तुम अपने और राष्ट्र के जीवन को उन्नत कर सकोगे।

समय और संयम:- समय एक मूल्यवान वस्तु है, किसी ने कहा है-

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।
सदा ऐश दौरा दिखाता नहीं।।

जीवन के अमूल्य क्षणों के सदुपयोग में ही जीवन की सार्थकता समझो।

जितेन्द्रियता नाम है संयम का। तुम आत्म-संयम के आधार पर अपने जीवन को आदर्श बनाओ। अपने मन, नेत्र, कान, और वाणी पर कठोर संयम रखो। मन चंगा तो कठौती में गंगा। बुरा मत देखो तथा बुरी भावना से मत देखो। कान से सुनी हुई बात को पहले परखो, फिर उस पर विश्वास करो, किसी की निन्दा न सुनो। वाणी को सुसंस्कृत करो।

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरों को शीतल करे, आपहु शीतल होय।।

परिश्रम से न घबराओ। कठोर परिश्रम ही तप है। विद्या, कुल और राष्ट्रीयता शुद्ध आचरण से ही शोभा पाते हैं। तुम वास्तव में तभी मनुष्य बन सकते हो, जबकि तुम मन से मननशील, हृदय से विशाल और सर्वहितकारी बनो। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं-

'मनुष्य उसी को कहना है जो मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल और गुणरहित क्यों न हो उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो तथापि उनका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें अर्थात् जहां तक हो सके यहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जायें, परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, (सत्यार्थ प्रकाश)

आत्म निरीक्षण :- स्वयं अपना अन्त: करण टटोल कर प्रश्न करो-

1. क्या मैंने आज अपने शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह पर विजय पाई?
2. क्या मैंने किसी को बुरी दृष्टि से तो नहीं देखा?
3. क्या मैंने किसी की निन्दा की या सुनी?
4. क्या मैंने अपने हाथों से दान दिया?
5. अपने हाथों से कोई सामाजिक तोड़फोड़ तो नहीं की?
6. मेरे चरण मुझे ऐसे स्थान पर तो नहीं ले गये जहां आचरण भ्रष्ट होता हो?

स्वामी विद्यानन्द विदेह

वासना :-

प्रतिज्ञा करो कि कामना के वशीभूत होकर अपने जीवन को हानि नहीं पहुंचाओगे। प्रतिदिन कहो-'मैं हृदय से साहसी और निर्भीक हूं।' वेद में कहा है-

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयम् परोक्षात्।
अभय नक्तमभयं दिवा न:, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य पालन :-

प्रतिदिन शान्त वातावरण में परमपिता परमात्मा का उसकी कृपा के लिये धन्यवाद करना, अपनी आत्मिक शक्ति का विकास करना तथा अपने माता-पिता तथा गुरुजनों का धन्यवाद करना अपना पावन कर्त्तव्य समझो। अपने जीवन और कार्य को, नि:स्वार्थ सेवा द्वारा, देश के लिये अर्पित करो। तुम अपने आपको एक अच्छे नागरिक, उद्योगी, गृहपति इत्यादि बनाने का प्रयत्न करो। सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी। **-परशुराम गोगना**

13वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन संपन्न

रोजड़ वानप्रस्थ साधक आश्रम गुजरात में हुआ आयोजन

समान गुणकर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों के बीच विवाह संबंध ही आर्य समाज की विचारधारा है। संस्कारित परिवार एवं समाज के निर्माण में इस विचार का महत्वपूर्ण स्थान है। उक्त विचार 13वें आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन के अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुरेशचंद अग्रवाल ने व्यक्त किये। रोजड़ वानप्रस्थ साधक आश्रम गुजरात में आयोजित इस सम्मेलन में बोलते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि आर्य परिवारों का मिलाना तथा उन्होंने विवाह संबंध के लिए अवसर उपलब्ध कराना ही हमारा मूल उद्देश्य है।

कोटा लौटने पर सम्मेलन के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ ईश स्तुति प्रार्थना मंत्रों के साथ हुआ। उपस्थित अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन कर सम्मेलन का प्रारंभ किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल प्रधान गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा एवं उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, हसमुख भाई परमार महामंत्री, श्री रणजीत सिंह परमार उपप्रधान, श्रीधन जी भाई आर्य उपमंत्री तथा श्रीकांति भाई काकाणी सदस्य गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा सहित राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा का बैज लगाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए महामंत्री हसमुख भाई परमार ने कहा कि आर्य परिवार परिचय सम्मेलन एक महत्वपूर्ण कार्य है। गुजरात सभा इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आगे बढायेगी। इस अवसर पर रणजीत सिंह जी परमार ने कहा कि इस कार्य को सफलतम बनाने के लिए सभी आर्यजन अपने-अपने परिवार के बच्चों को इन परिचय सम्मेलन से जोड़ें।

सम्मेलन में उपमंत्री धनजी भाई ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह हमारा पहला प्रयास है। इस आयोजन के माध्यम से परिचय सम्मेलनों का संदेश गुजरात में दूर-दूर तक पहुंचेगा और आर्य पुत्र-पुत्रियों के रिश्ते निर्धारण की समस्या का समाधान होगा।

उद्घाटन कार्यक्रम के पश्चात् राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा के निर्देशन में सम्मेलन प्रारंभ हुआ। उपस्थित युवक एवं युवतियों ने मंच पर आकर आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय दिया। सम्मेलन में उपस्थित युवक एवं युवतियों को अलग-अलग रंग के बैज लगाकर उनके पृथक-पृथक बैठक की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर विस्तृत जानकारी हेतु विवरणिका का प्रकाशन किया गया। जो उपस्थित युवक-युवतियां एवं अभिभावकों को निशुल्क दी गई। सम्मेलन में पूर्व पंजीकरण के अलावा तत्काल पंजीयन की व्यवस्था भी की गई। इस अवसर पर तत्काल पंजीयन, विवरणिका वितरण, बैज वितरण आदि के विभिन्न स्टॉल लगाये गये थे।

उक्त सभी कार्यों में कोटा राजस्थान से पधारे श्री रामप्रसाद याज्ञिक ने अमूल्य योगदान दिया। परिचय सम्मेलन में उपस्थित सभी आगन्तुकों के लिए आवास चाय नाश्ता एवं भोजन की निशुल्क व्यवस्था भी की गई थी।

इस अवसर पर एक अभिभावक श्रीमती अग्रवाल ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि कोटा के लोगों की यह अच्छी पहल है कोटा से हमें विशेष लगाव है मेरे पुत्र और पुत्री दोनों ने कोटा में रहकर कोचिंग की और आईआईआईटी से इंजीनियर बन सफलता प्राप्त की व आर्य समाज का वातावरण भी दिया है। कार्यक्रम के अन्त में गुजरात के संयोजक श्री हंसमुख भाई परमार द्वारा सभी का धन्यवाद अर्पित किया गया। -अरविन्द पाण्डेय,
प्रचार एवं कार्यालय सचिव, मो. 09799498477

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

'वैदिक संस्कृति के बारे में जानने के बाद मेरा रुझान आर्य समाज की तरफ बढ़ा'

गाँव में मेरे घर के सामने एक चौपाल है जहाँ पर हर रविवार को गाँव के कुछ युवा साथी यज्ञ किया करते थे। ये लगभग 1999 की बात है। जिनमें धीरज कुमार आर्य नाम के एक महानुभाव भी थे जो उस समय यज्ञ के ब्रह्मा हुआ करते थे। धीरज कुमार आर्य जी जब वेद मंत्रों का उच्चारण करते थे तो वो मेरे घर पर भी सुनाई देते थे। उनकी ओजस्वी और मधुर वाणी में वेद मन्त्रों को सुनकर मुझे बहुत ही अच्छी अनुभूति होती थी। इसी वजह से कुछ दिनों के बाद मैं भी उनके साथ यज्ञ में बैठने लगा। यज्ञ के बाद धीरज कुमार आर्य जी प्रवचन किया करते थे जिसमें वे वैदिक संस्कृति के बारे में या फिर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बारे में बताया करते थे। जिन्हें सुनने के बाद मेरा रुझान आर्य समाज की तरफ होने लगा। अब मैं आर्य समाज के और स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहता था। जब मैंने धीरज कुमार आर्य जी के सामने ये बात कही तो उन्होंने मुझे वैदिक साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित किया। उससे अगले रविवार को उन्होंने मुझे कुछ पुस्तके पढ़ने के लिए दी। जिनमे इंद्र विद्यावाचस्पति द्वारा लिखित ''मेरे पिता'' तथा देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय द्वारा लिखित ''स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र'' था। इसके कुछ दिन बाद उन्होंने मुझे स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित ''सत्यार्थ प्रकाश'' और ''ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'' दी। इसके साथ मैंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे में लिखी गई कई सारी किताबें पढ़ीं। इन सभी पुस्तकों को पढ़ने के बाद मुझे अपने अन्दर बहुत बदलाव महसूस हुआ और तभी से मुझे वैदिक साहित्य पढ़ने की ललक और ज्यादा

पैदा हो गई। मैंने धीरज कुमार आर्य जी से ढेरों किताबें पढ़ी। उन्हीं किताबों और धीरज कुमार आर्य जी के प्रवचनों को सुनकर मेरा मन पूरी तरह आर्य समाज में लगने लगा।

आर्य समाज से जुड़ने से पहले भी मैं मन्दिर जाना पसंद नहीं करता था लेकिन घर वालों के कहने से कभी-कभी चला जाता था। लेकिन आर्य समाज के रंग में रंगने के बाद मैंने पूर्णत: ये सब भी छोड़ दिया। यहाँ मैं एक इंसान का नाम जरुर लेना चाहूँगा जिन्होंने मुझे इस रास्ते पर लाने में बहुत सहयोग दिया। वो है मेरे पिता श्री सुरेन्द्र सिंह जिन्होंने एक पिता होने के नाते मुझे कभी भी आर्य समाज के किसी भी कार्यक्रम में या यज्ञ में जाने से नहीं रोका, सिर्फ इतना ही नहीं उन्होंने मुझे इसके लिए हमेशा प्रेरित ही किया। इसलिए मैं इन सभी का तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूँ कि इन सब ने मेरे जीवन की धारा को आर्य समाज की ओर मोड़ दिया और मुझे इतने अच्छे रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी, जहाँ नारी का सम्मान होता है, छुआ छूत, ऊँच-नीच, भेद-भाव और पाखण्ड या आडम्बर लेश मात्र भी नहीं हैं। **-अमित आर्य**

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ डाक-'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

पृष्ठ 1 का शेष

विश्व पुस्तक मेला ...

सत्यार्थ प्रकाश का विमोचन किया गया। इसका प्रकाशन सभा कोषाध्यक्ष श्री विद्यामित्र ठुकराल द्वारा प्रदत सहयोग से किया गया है। पुस्तक मेले में उर्दू सत्यार्थ प्रकाश श्री बलदेव राज महाजन जी द्वारा दिये जा रहे सहयोग से आम जनता को केवल मात्र 70/- रुपये में दिया जा रहा है।

इस अवसर पर आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी एवं महामंत्री श्री विनय आर्य के साथ-साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी मुख्यरूप से उपस्थित थे। मेले का समापन 17 जनवरी रात्रि 8.00 बजे होगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज के वैदिक साहित्य स्टालों पर पहुंच कर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह वर्धन करें। इस पुस्तक मेले में समस्त स्टालों की बुकिंग आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से प्रदत सहयोग से कराई गई है।

साहित्य प्रचार स्टालों पर सभा उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, सभा मन्त्री श्री सुखबीर सिंह आर्य, श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता जी, आर्य केन्द्रीय सभा के मन्त्री श्री एस. पी. सिंह, जी, डॉ. मुकेश आर्य जी, श्री धर्मेन्द्र कुमार जी, डॉ. विवेक आर्य जी, श्री वेदव्रत जी, श्री रामेश्वर दयाल गुप्ता जी एवं अन्य अनेक महानुभाव अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। पुस्तक मेले के संयोजक श्री सुरेन्द्र कुमार चौधरी जी पूर्ण जिम्मेदारी को निभा रहे हैं।

विश्व पुस्तक मेला - 2016

सत्यार्थ प्रकाश में छूट देने हेतु दान देने वालों की सूची

गतांक से आगे

27.	राकेश ठुकराल	10000/-
28.	सत्यानन्द आर्य	11000/-
29.	शिव भगवान लाहोटी	10000/-
30.	श्रीमती मृदुला चौहान	10000/-
31.	आर्य समाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी	5000 /-
32.	ठाकुर विक्रम सिंह	21000/-

क्रमशः

इस मद में प्राप्त होने वाले सहयोग की सूची इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित की जाती रहेगी। आप भी अपने परिवार आर्य समाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जन साधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेज कर सहयोग कर सकते हैं। आप अपनी दान राशि सीधे सभा के बैंक **अकाउंट नम्बर 0133002100005251 पंजाब नैशनल बैंक**, **IFS code: PUNB 0013300 MICR No. : 110024092** में भी जमा कर सकते हैं। कृपया राशि जमा कराने के उपरांत श्री संदीप आर्य (9650183339) को अवश्य सूचित करें ताकि रसीद भेजी जा सके। **सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अंतर्गत आयकर मुक्त है।** **-महामंत्री**

महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक में पारित प्रस्ताव के अनुसार महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ का प्रकाशन कार्य आरंभ हो गया है। आप सभी से निवेदन है कि यदि आप के पास महाशय धर्मपाल से संबंधित कोई लेख/सूचना/स्मृति चित्र/कविता/संस्मरण/पत्र व्यवहार या आपके यहां उनके नाम से लगा कोई शिलालेख आदि हों तो कृपया 'महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति' के नाम-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर तत्काल भिजवाने की कृपया करें जिससे उन्हें ग्रंथ में स्थान दिया जा सके। आप अपनी प्रकाशन सामग्री समिति को **aryasabha@yahoo.com** ईमेल भी कर सकते हैं। **-सचिव, महाशय धर्मपाल अभिनन्दन ग्रंथ समिति**

पृष्ठ 1 का शेष

मालदा का ...

युद्ध के अभिलाषी लोगों को भली प्रकार देख लूँ कि मुझे किन-किन लोगों से युद्ध करना है और भली प्रकार धृतराष्ट्र के पुत्रों का हित-अनहित चाहने वालों को देख ना लूँ तब तक मेरे रथ को खड़ा रहने दिया जाये। ठीक वो हालात लिए आज हम इस देश में कलम लिए खड़े हैं ताकि इस देश का हित-अनहित चाहने वालों की पहचान की जा सके। आज देश दो हमलावरों के बीच खड़ा है एक बाहरी आतंक और दूसरा आंतरिक आतंक और सरकारों को इन दोनों के बीच खड़ा होकर तय करना चाहिए कि पहले किस से निपटा जाये क्योंकि जब तक बाहरी आतंक को आंतरिक आतंक की मदद मिलती रहेगी बाहरी आतंक समाप्त नहीं हो सकता और इस बात को समझने के लिए इतिहास का एक वाक्य काफी है कि जयचंद ने गौरी का साथ न दिया होता तो भारत का सर्वनाश ना हुआ होता। केंद्र और राज्य सरकारों ने मालदा की घटना पर पर्दा डाल दिया या ये कहो मौन साध लिया। किन्तु कब तक? चलो मान लेते है कि हिन्दू महासभा के अध्यक्ष कमलेश ने विवादित बयान दिया था लेकिन भारतीय संविधान के अनुसार उन पर गिरफ्तारी के तहत कार्रवाही हुई तो 96 करोड़ लोगों ने संविधान का सम्मान किया और इस कारण अब वह जेल के अन्दर हैं किन्तु यह भीड़ कौन थी? जो उसके एक महीने बाद उनकी फांसी की मांग कर रही थी। मालदा के घरों और दुकानों को लूट रही थी थानों और गाड़ियों में आग जला रही थी। और अब सरकार उनके खिलाफ कार्यवाही से क्यों बच रही है? जो मुस्लिम धर्मगुरु पठानकोट हमले पर पाकिस्तान की निंदा (मजम्मत) कर रहे हैं वो मालदा हिंसा पर मौन क्यों हैं कहीं यह मौन अगली हिंसा की स्वीकृति का लक्षण तो नहीं है?

-राजीव चौधरी

राज्यस्तरीय युवा चेतना शिविर सम्पन्न

आर्षज्योति गुरुकुल आश्रम में 23 से 27 दिसम्बर 2015 को राज्य स्तरीय युवा चेतना शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें प्रदेश के अनेक विद्यालयों के छात्रों ने योगासन, जूडो कराटे के साथ-साथ वैदिक धर्म की शिक्षा प्राप्त की। शिविरार्थियों को बौद्धिक शिक्षा प्रदान करने के लिए संस्कृत विद्वामंडलम् के अध्यक्ष डा. गणेश कौशिक, सचिव सुरेश शर्मा, अपेक्स बैंक के अध्यक्ष व भारतीय जनता पार्टी के नेता अशोक बजाज, मुख्यमंत्री छ.ग. शासन के निजी सलाहकार डा. अशोक चतुर्वेदी, रायपुर एम्स के डीन डा. सूर्यप्रकाश धनेरिया, गुजरात से पधारे स्वामी शान्तानन्द जी महाराज आदि अनेक गणमान्य विद्वानों एवं स्थानीय नेतागण उपस्थित थे।

आर्य समाज ने कराया नेत्रहीनों का विवाह संस्कार

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनि नगर, जोधपुर राज. के तत्वावधान में नेत्रहीन संगीत अध्यापक पांचाराम जी नेत्रहीन दीपमाला के साथ सात फेरो के बंधन में बंध गये। पंडित शिवराम आर्य के पौरोहित्य में तथा महेश परिहार, उप प्रधान संतोष परिहार एवं श्रीमति प्रमिला-गजेन्द्र सांखला के सहारे से दुल्हा-दुल्हन का प्राणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करवाया गया। विवाह समारोह

में अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। नगरवासियों ने बढ़-चढ़कर सहयोग प्रदान किया। **-मंत्री**

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Cow the Mother

Vedic texts have adored the mother at par with the Lord and the cow with the mother. A baby lives on the milk of the cow in lieu of mother's milk. When other forms of food are forbidden for an ailing person, the milke of the cow is prescribed as diet for him. That is why, the scriptutes have described cow-milk as nectar. Milk, curd, butter, cow-dung and all other cattle products are most beneficial for man's health and living. Lowing, the chaacteristic voice of a cow, is a proven relief for ailimng persons. Also, it is considered as most auspicious for a house.

Theverse says, "O cows, you strengthen even the worn out and fatigued. you make the unlovely beautiful to look on. Your lowing is auspicious, and makes my dwelling cheerful and prosperous. Great is the abundance that is attributed to you in our auspicious ceremonies."

Elsewhere in the hymn is said, " May the master of the cattle be long possessed of them with the milk products of which he makes offerings to God and with which he serves the godly men. Let not the cows run away from us, let no thief carry them away; let no hostile weapon fall upon them."

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु।। (Rv.vi.28.6)

Yuyam gavo medayatha krsam cid asriram cit krnutha supratikam.

bhadram grham krnutha bhadrvaco brhad vo vaya ucyate sabhasu..

The Fabric of Life

Man is a weaver who weaves his life ceaselessly with the threads of his ations. The nobler are his deeds, the more glorious is the life-fabric. As the weaver weaves clothes in brightness of light to avoid joint and twist in the woven material; man likewise should perform all actions with the lamp of knowledge. The verse says that our wise ancestors have devised pathways for a smooth and harmonious life by sacred acts and divine wisdom which we should sincerely follow with love, devotion and determination.

'Manurbhava'-may you first strive to become man. This is possible only when man sets the reins of his mind tight and controls the horses of the sense organs. He should be resolute to guard and enrich the splendour of human life by weaving threads of divine knowledge free from defect. All who bear the shape and form of a human being do not, in true sense, possess the virtues of man. The inherent nature of man is to love and to serve. Man is degraded when he embraces sectarian views and starts thinking and doing in a spirit of envy, jealousy and hatred. 'janaya daivyam janam- "ye men, you are worthy to elevate yourself to divinity which other beings have no chance to. Rise to the status of an enlightened one and establish proximity with the Lord of bliss."

तंन्तुं तन्वन्रजसो भानुसन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। (Rv. x.53.6)

Tantum tanvan rajaso bhanum anu ihi jyotismatah patho raksa dhiya krtan.

anulbanam vayata joguvam apo manur bhava janaya daivyam janam..

Towards Harmony

"Ye men, may you move together, talk together in one voice; let your minds be in accord; my you enjoy your assigned share of fortune like the ancient sages."

"Common be the prayer of these, common be the acquirement, common be the purpose. I repeat for you, ye men, a common prayer. May your devotion be one and the same."

"May your resolves be one; Ye men, may your hearts feel alike; may your thinking be one; and thus may all of you live in perfect harmony and happiness."

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।। (Rv. x.191.2)

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

समानं मत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।। (Rv. x.191.3)

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। (Rv. x.191.4)

Sam gachhadhvam sam vadadavam sam vo manassi janatam.

deva bhagam yatha pureve sanjanana upasate..

Samano mantrah samitih samani samanam manah saha cittam esam.

Samanam mantram abhi mantraye vah samanena vo havisa juhomi..

Samani vah akutih samana hrdayani vah.

Samanam astu vo mano yatha vah sushasati..

प्रेरक प्रसंग

क्षमाशील आदर्श सुधारक चिरञ्जीवलाल

ऋषि दयानन्द जी के पश्चात् जिस आर्यपुरुष ने धर्म की वेदी पर सर्वप्रथम अपने प्राण दिये, वे चिरञ्जीवलाल थे। उन्हें चिरञ्जीलाल भी कहा तथा लिखा जाता था। इन पंक्तियों के लेखक द्वारा लिखा उनका जीवन-चरित्र 'रक्तसाक्षी चिरञ्जीवलाल' छप चुका है। इन्होंने लुधियाना में ऋषि के दर्शन किये थे। ये पहलवान थे। सम्पन्न दुकानदार थे, परन्तु धर्म-प्रचार के जोश में अपना काम-धन्धा बन्द करके मिशनरी बन गये। थोड़े पढ़े-लिखे थे। बुद्धि तीव्र थी। गाते बहुत अच्छा थे। कविता भी उर्दू, पंजाबी, हिन्दी में रचते थे, परन्तु छन्दशास्त्र का ज्ञान न था। अनुभूति से ही लिखते थे। आप नये-से-नया भजन रचकर बाजारों में सुनाकर प्रचार किया करते। कहीं खड़े होकर व्याख्यान भी दिया करते थे। बड़े सरल गीतों में अपना भाव व्यक्त किया करते थे। एक बार मांस-भक्षण के खण्डन में लिखा -

कचौरी का तुम क्या मजा जानते हो।
फकत हड्डियां ही चबाना जानते हो।।

सुरापान के विरुद्ध उनकी एक रचना बड़ी लोकप्रिय हुई। उसका एक पद ऐसे था-

भन बोतल तोड़ प्याले नूं।
लख लानत पीवन वाले नूं।।

इसे सुनकर अनेक मनुष्यों ने सुरापान का त्याग किया। उन दिनों एक व्यक्ति चिरञ्जीवलालजी के विरोध में आगे निकला। उसका नाम था बिहारीलाल चूर्णवाला। वह चूर्ण बेचते हुए सुरापान के पक्ष में चिरञ्जीवलाल के गीत की तर्ज पर एक गीत बोला करता था। उसके गीत की टेक थी-

आ बोतल भरदे प्याले नूं।
की पता चिरञ्जी साले नूं।।

आगे-आगे चिरञ्जीवलाल सुरापान के विरोध में प्रचार करते निकलते। घरबार फूंककर ऋषि का दीवाना देश-सुधार तथा परोपकार में लगा रहता। उसके पीछे-पीछे बिहारीलाल चूर्णवाला कुछ शराबियों के साथ सुरापान के गीत गाता हुआ कहता जाता-

की पता चिरञ्जी साले नूं।।

चिरञ्जीवलाल पहलवान भी था। उसकी गर्दन भी तोड़ मरोड़ सकता था, परन्तु क्षमाशील दयानन्द का शिष्य धर्म-प्रचार में अपमानित होने में ही अपनी प्रतिष्ठा मानता था। वह बिहारीलाल की इस गाली को सुनकर भी अपने कार्य में मग्न वा मस्त रहता। इसका यह परिणाम निकला कि लोगों में बिहारीलाल के प्रति घृणा का भाव पैदा होता गया। चिरञ्जीवलालजी का मान बढ़ता गया। शराबियों के मन में यह भाव पैदा हुआ कि यह तो किसी का नौकर नहीं। किसी से कुछ लेता नहीं। किस लिए गाली खाता है? हमारे सुधार के लिए ही। ऐसा सोचकर कई शराबियों ने सुरापान त्यागने के व्रत लिये।

आर्य समाज के इतिहास में और देश के सुधार-आन्दोलन के युग में धर्महित सर्वप्रथम जेल जाने वाला और कष्ट सहने वाला प्रथम वीर यही चिरञ्जीवलाल था। इसकी धर्मभावना, वीरता, नम्रता तथा तड़प पर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज भी मुग्ध थे।

संस्कृतम्

संगणकस्य (कम्प्यूटरस्य) उपयोगित्वम्

विश्व-विज्ञान-ज्ञानस्य, संगणकोऽस्ति संग्रहः।
सर्वकार्यस्य सिद्ध्यं, संगणकं सदाऽऽश्रथा।।

संगणकः शब्द आंग्लभाषायाः गणनार्थकात् कम्प्यूटर शब्दाद् निष्पद्यते, अतः कम्प्यूटरस्य कृते संगणकशब्दः प्रयुज्यते। आधुनिकेषु आविष्कारेषु कम्प्यूटरस्य विशिष्टं महत्त्वं वर्तते। संगणकेन मानव-जीवने नवीना क्रांतिः विहिता। संगणकस्य यादृशी तीव्रा प्रगतिः दुश्यते, न तादृशी प्रगतिः अन्यस्थाः कस्या अपि क्रान्तेः संलक्ष्यते। अस्य उपयोगः भवननिर्माणे, विमानादीनां दिशा-निर्देशने, रोगाणां सूक्ष्म-परीक्षणे, शोधकार्ये, वाणिज्ये व्यवसाये चे, शिक्षाक्षेत्रे, मनोरंजन-विद्यौ, ललित-कलादिषु च भवति।

आकार-प्रकार-दृष्टया कार्यक्षमतां च आश्रित्य कम्प्यूटरस्य चतवारो भेदाः सन्ति-1. मेन-फ्रेम-कम्प्यूटरः, 2. मिनि कम्प्यूटरः, 3. माइक्रो-कम्प्यूटरः, 4. सुपर-कम्प्यूटरः च।

शिक्षाक्षेत्रे संगणकानां बहुविधा उपयोगिता। प्रशिक्षणकाये, विविध-विषयाणां शिक्षणे च संगणकस्य उपयोगो भवति। परीक्षा-कार्येषु, परिणाम- संगणने, परीक्षा- परिणाम- प्रकाशनादि- कार्येषु अस्य उपयोगो भवति। पुस्तकादि- प्रकाशनेऽपि अस्य सहायता गृह्यते। शोधकार्येषु, भौतिकविज्ञाने, रसायन- विज्ञाने, गणितशास्त्रे, कृषिविज्ञाने, भैषज्यविज्ञाने, समाज-विज्ञानादिषु संगणकस्य उपयोगः प्रतिदिनं वर्धते। कम्प्यूटर-माध्यमेन विशालभवनानां सेतूरानाम् आदर्शचित्रं सारल्येन प्रस्तूयते। व्यापारक्षेत्रे संगणकानाम् उपयोगः प्रतिदिनं वर्धते। वित्तीय-संस्थानां कृते, बीमा-शेयर-प्रभृति-कार्येषु संगणकः अनिवार्यतां भजते। साम्प्रतं सर्वाऽपि टेलीफोन-एक्सचेंज-व्यवस्था संगणकानां माध्यमेन विधीयते।

कम्प्यूटर-संबद्धा इन्टरनेट-प्रणाली महासमुद्रवद् वर्तते। सर्वस्मिन् जगति यत् किंचिद् ज्ञानं विज्ञानं शोधकार्यदिकं वर्तते, तत् सर्वम् एकत्रैव प्राप्तुं शक्यते।

देशस्य उन्नत्यै, विकासाय च संगणकस्य महती आवश्यकता वर्तते।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित पत्र

मुम्बई में महर्षि दयानन्द का पादरी कुक को शास्त्रार्थ के लिए आवाहन करता हुआ एक महत्त्वपूर्ण पत्र

मूल पत्रः

पण्डित दयानन्द सरस्वती की ओर से मिस्टर जश्वसेफ कुक साहब के पास...
बालकेश्वर मुम्बई
जनवरी 18, 1882
महाशय,
आपने अपने सर्वसाधारण व्याख्यानों में निश्चय पूर्वक कथन किया है कि -
(1) श्चिन (ईसाई) धर्म ईश्वर मूलक है ।
(2) यह पृथ्वी भर में अवश्य ही विस्तृत हो जाएगा ।
(3) अन्य कोई भी धर्म ईश्वर मूलक नहीं है ।

उत्तर में मेरा कथन है कि उक्त प्रतिज्ञाओं में से एक भी ठीक नहीं है। यदि आप उक्त प्रतिज्ञाओं को यथार्थ सिद्ध करना चाहते हैं और आर्यावर्त्त निवासियों को अपने कथनों को विना प्रमाण प्रस्तुत किए स्वी त कराना नहीं चाहते तो मैं प्रसन्नता पूर्वक आपसे शास्त्रार्थ करने के लिए उद्यत रहूंगा। आगामी रविवार सन्ध्या समय साढ़े पांच बजे जबकि मैं फ्रामजी कावसजी इन्स्टिट्यूट में व्याख्यान दूंगा, शास्त्रार्थ के लिए नियत करता हूं । यदि उक्त समय आपको सुविधा का न हो तो आप अपनी इच्छानुसार कोई समय तथा बम्बई का कोई स्थान शास्त्रार्थ के लिए नियत करें । क्योंकि हम दोनों में से कोई भी एक दूसरे की भाषा नहीं बोल सकता । अत: मैं निर्धारित करता हूं कि मेरे तर्क आपको और आपके तर्क मुझको अनुवादित कर सुना दिए जाएं और हम दोनों के कथन संक्षिप्त लेखब) होकर उन पर हम दोनों के हस्ताक्षर हो जाएं । आपकी ओर तथा मेरी ओर से प्रतिष्ठित साक्षिओं का भी शास्त्रार्थ में विद्यमान रहना आवश्यक है, जिन में से तीन वा चार को भी उक्त संक्षिप्त लेख पर हम लोगों के साथ हस्ताक्षर करना पड़ेगा । उक्त शास्त्रार्थ पुस्तकाकार छप कर सर्व साधारण के सन्मुख प्रस्तुत किया जाएगा, जिसे देख कर लोग अपना निश्चय कर लेंगे कि कौन-सा धर्म श्रेष्ठ ईश्वरोक्त है ।

- दयानन्द सरस्वती

(सन्दर्भ ग्रन्थ: 'ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन', पृष्ठ 426-427, पत्र 455, द्वितीय संस्करण, 1955 ई., सम्पादक श्री पण्डित भगवद्दत्त जी)

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली 32वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली का 32वां वार्षिकोत्सव 11-14 फरवरी 2016 को मनाया जाएगा। कार्यक्रम में वैदिक प्रवक्ता आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय होंगे। सत्यपाल पथिक जी ने अपने मधुर भजनों से समां बांधेंगे। इस अवसर पर आचार्य धनंजय शास्त्री जी को सम्मानित किया जाएगा।

गुरुकुल कोसरंगी में राज्य स्तरीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न

छ.ग. संस्कृत विद्यामण्डलम् और गुरुकुल के संयुक्त तत्वावधान में 5 दिवसीय संस्कृत शिक्षक प्रशिक्षण दिनांक 1 जनवरी 2016 को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्यातिथि डॉ. गणेश कौशिक; अध्यक्ष संस्कृत विद्यामंडल, अजय विश्वास; सहायक संचालक, डॉ. सुरेश शर्मा; सचिव संस्कृत विद्या मंडलम्, पी.के. शर्मा; महासमुन्द, आचार्य कोमल प्राचार्य गुरुकुल कोसरंगी, योगेश्वर उपाध्याय राजिम, आचार्य सुखेन्द्र व्याख्याता; हाई स्कूल मुनगासेर; जिला संस्कृत संयोजक, श्रीमती शकुन्तला शर्मा; साहित्य वि की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य समाज सैक्टर-9, पंचकूला का 29वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज सैक्टर-9 पंचकूला के तत्वावधान में दिनांक 6 दिसम्बर 2015 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज 'स्मारिका का प्रकाशन' भी किया गया।

-धर्मवीर बत्तरा

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली का 25वां स्थापना दिवस

आर्य समाज सूरजमल विहार, दिल्ली के 25वें स्थापना दिवस पर 17-26 जनवरी 2016 तक दस दिवसीय ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन होगा। कार्यक्रम में यज्ञ के ब्रह्मा श्री डा. धर्मवीर जी; मंत्री परोपकारिणी सभा; अजमेर रहेंगे। वेद पाठी विद्वान श्री उदय भान जी शास्त्री व श्री विजित शास्त्री होंगे। कार्यक्रम में यज्ञ प्रात: 800 बजे से 10.00 बजे तक रहेगा। **-प्रधान**

फिजियो थैरेपी एवं योगिक क्रियाओं के माध्यम से असाध्य रोगों का सुलभ उपचार

दोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल, कैनाल रोड में प्रसिद्ध योगाचार्य एवं पतंजलि से प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा 1 जनवरी 2016 से योग कक्षाएं आरंभ करवाई गई हैं। जिसमें प्रात: एवं सांय महिलाओं तथा पुरुषों के लिए अलग-अलग कक्षाओं का प्रबन्ध है। इस कक्षा का मासिक शुल्क मात्र 300/- रुपए है। कक्षाओं में योग द्वारा साध्य एवं असाध्य रोगों का उपचार किया जाता है।

मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ का आयोजन

आर्य समाज मंदिर मानसरोवर पार्क, शाहदरा दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 15 जनवरी 2016 को मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य ब्रह्मदेव वेदालंकार जी होंगे, जिसका सहयोग श्री रोहित 'विद्यालंकार' जी करेंगे।

-संदीप वेदालंकार, मंत्री,
मो. 09899875130

स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज शक्ति नगर, अमृतसर में 20 दिसम्बर 2015 रविवार को आर्य जगत के महान संसासी, बलिदानी, कर्मयोगी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ हवन यज्ञ से हुआ। जिसमें मुख्य यजमान श्री मुकेश आनन्द जी थे। भजन प्रेमियों ने भजनों के माध्यम से स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्य वक्ता पं. ओम प्रकाश जी शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सर्वश्री दर्शन कुमार, हीरा लाल कंधारी, नुगल किशोर आहूजा, राकेश मेहरा, सोमदत सूद, धर्मबीर, प्रवीन तलवाड़, दीपक महाजन आदि उपस्थित थे।

-राकेश मेहरा, महामंत्री

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान में

5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की महत्वाकांक्षी योजना 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ' की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली के तत्वावधान में 3 जनवरी 2016 को प्रात: 11.30 बजे एम जी-1, विकासपुरी के सैंन्ट्रल पार्क में 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ श्रीमती सुनीता जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। श्रीमती किरण चौपड़ा ने कार्यक्रम संयोजिका का दायित्व वहन किया। कार्यक्रम को एम जी-1, विकासपुरी के समस्त निवासियों, रेजीडेन्ट वैलफेयर एसोसिएशन विशेषकर श्री नरेद्र शर्मा, श्री पंकज गुप्ता एवं श्री तिलकराज कैथ का सहयोग प्राप्त हुआ।

-सूर्यकांत मिश्रा, प्रचार मंत्री

'अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' का उद्घाटन समारोह

निर्मित बहु उद्देश्यीय अभूतपूर्व 'अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र' का उद्घाटन समारोह पौष कृष्ण 5 वि.स., बुधवार (30 दिसम्बर 2015) को मध्याह्नोत्तर पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक के सानिध्य में 2 बजे से 5 बजे तक सम्मपन हुआ। इस अवसर पर उद्घाटन कर्त्ता वान. श्री सत्यपारायण जी लाहौटी; कलकत्ता, श्रीमती अंजु सुधीर जी मुंजाल; दिल्ली, श्री राकेश जी जैन; लुधियाना, वान. श्री रमेश मुनि जी; अजमेर, डॉ. हेमन्त जी मुर्के; अमरावती, वा. जयाबेन जी आर्या; इंग्लैण्ड, श्री मणिभाई जी पोकार; महेगाम, श्री शान्तिलाल जी पटेल; मुम्बई, श्री रणजीतसिंह जी परमार; राजकोट से व अतिथि विशेष श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल; अहमदाबाद, श्री धरमशीभाई जी पटेल; मुम्बई, श्री बलदेवसिंह जी सिसोदिया; दहेगाम, श्री धनश्याम भाई जी माणेक; राजकोट, श्रीमती राज जी मल्होत्रा; नोएडा, श्री सुरेशभाई जी चावड़ा; राजकोट सहित अन्य आर्यजन भी मौजूद थे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

11 जनवरी 2016 से 17 जनवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 14 जनवरी 2016/ 15 जनवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 13 जनवरी, 2016

स्वास्थ्य चर्चा

दिमाग ताकतवर बनें

1. बनफसा, धनिया, गुलाब के फूल, बादाम गिरी 30-30 ग्राम बालछड़ उस्तखदूस 15-15 ग्राम कूट छान कर 10 ग्राम दवा प्रात: दूध से लें।

2. बनसलोचन 50 ग्राम छोटी इलायची दाना 10 ग्राम पीसकर 60 ग्राम खांड मिलाकर 5 ग्राम प्रात: दूध से लें।

3. त्रिफला पिसा 200 ग्राम में खांड 100 ग्राम मिलाकर 10 ग्राम प्रात: पानी से प्रयोग करें। इससे दिल दिमाग दोनों ताकतवर बन जाएंगे।

4. 50 ग्राम सौंफ आधा किलो पानी मे रात को भिगोएं। प्रात: उबालें एक चौथाई रह जाने पर निथार कर इस पानी को 250 ग्राम देशी घी में गेर कर फिर उबालें। पानी जल जाने पर उतार कर ठंडा कर सोते समय 1 चम्मच घी 250 ग्राम दूध में खांड मिलाकर पीयें।

5. ब्रह्मबूटी 7 ग्राम बादाम गिरी 7 काली मिर्च 7 रात को 200 ग्रम पानी में भिगोएं। प्रात: पीस छान कर खांड मिलाकर प्रात: 15-20 दिन खाली पेट पीयें।

6. ब्रह्मदण्डी या संखाहुली 7 ग्राम काली मिर्च रात को 200 ग्राम पानी में भिगोएं। प्रात: पीस छान कर खांड मिलाकर प्रात: 15-20 दिन खाली पेट पीयें।

7. नाग भस्म एक रत्ती शुद्ध शिलाजीत एक रत्ती प्रवाल पिष्ठी आधी रत्ती को शहद से प्रात: सायं लें।

8. चांदी भस्म एक रत्ती प्रवाल पिष्ठी एक रत्ती स्मति सागर रस एक रत्ती को ब्रह्मी शर्बत से प्रात: सायं लें।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से बच्चों के लिए गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में

अमर शहीद क्रांतिकारियों के जीवन पर आधारित विशेष कॉमिक्स प्रकाशित

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना (पंजाब)

सत्र 2016-2017

छठी कक्षा में (आयु 9 से अधिक 11 से कम) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2016 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।)

● कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 03 अप्रैल 2016 दिन रविवार को प्रात: 8.00 बजे होगी। ● सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सत्यानन्द मुंजाल,
कुलपति, दूरभाष: 9814629410

शोक समाचार

श्री सुधीर मदान को मातृ शोक

आर्य समाज कालकाजी के मंत्री श्री सुधीर मदान जी की माता जी श्रीमती कैलाश मदान का दिनांक 10 जनवरी को 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 12 जनवरी 2016 को आर्य समाज में सम्पन्न हुई। जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ आसपास की अनेक आर्य समाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंच कर माता जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह